अभिव्यक्ति, मूर्तिकला और माध्यम

सन्तोष कुमार यादव
वरिष्ठ प्रवक्ता (मूर्तिकला)
(एस.आई.एफ)
स्वामी विवेकानन्द सुभारती
वि.वि., मेरठ

कला का विकास मानवीय अभिव्यक्ति से जुड़ा हुआ है। अभिव्यक्ति जीवन की एक ऐसी आवश्यकता है जिसके बिना जीवन जीना बहुत मुश्किल है। हमारे चारो तरफ का वातावरण मन की सतह पर भावना रूपी पत्थर मारता है। जिसके परिणाम स्वरूप मन के सागर मे संवेग उत्पन्न होता है। सम्वेगों की शक्ति से अभिव्यंजना तरंगायित हो उठती है। यह क्रिया प्रतिक्रिया और अभिव्यक्तियों का क्रम अनवरत चलता रहता है। किन्तु कुछ ऐसे मन भी होते है जिनपर प्रतिक्रिया की हिलोरें अपनी प्रवल संवेदना के कारण अमिट सी होने लगती है। और उस मन की सुख शान्ति के लिये उन अभिव्यक्तियों का निखार उचित ही नही आवश्यक भी हो जाता है। चूंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है इसलिये उसे अपने जीवन मे घटने वाली घटनाओं की अभिव्यक्ति करना आवश्यक हो जाता है। यह अभिव्यक्ति उसके जीवन के लिये परम आवश्यक है। यह भावाभिव्यक्ति मानव जीवन के लिये ही नही जानवरों के लिये भी बहुत आवश्यक होती है। इस अभिव्यक्ति के अन्तर्गत ही वह अपने जीवन के दुख व प्रसन्नता के भाव को प्रकट करता है। इसलिये अभिव्यक्ति का मानव जीवन मे महत्वपूर्ण स्थान है।

आदिकाल से ही मानव ने अपनी भावना को व्यक्त करने के लिय विभिन्न माध्यमों सहारा लिया, उनमे से मूर्तिकला भी एक माध्यम है। मूर्तिकला का इतिहास बहुत पुराना है सायद उतना जितना कि मानव का। जिस समय मानव ने धरती पर जन्म लिया उसी समय से वह अपने जीवन को समृद्ध और सुन्दर बनाने की चेष्टा करने लगा था। उसकी इस चेष्टा ने कई निर्माण कार्यों को जन्म दिया। जिसके फलस्वरूप उसने कई ऐसी कृतियों का निर्माण किया जिसे आज हम कला के आधार के रूप मे जानते है। इन कला कृतियो को उसने अनगढ़ पत्थरो के औजारों तथा पेडो की टहनियों से बनाई गई तूलिका के द्वारा टेड मेड़ी कृतियों के के रूप मे गुफाओं और चट्टानों की दीवारों पर अंकित किया है। आदिकाल में मानव रेखा तथा आकार खोदकर तथा खरोंच कर चित्र बना कर अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति करता था। मनुष्य ने रेखा तथा आकार के द्वारा अपने विकाश, परमात्मा और समय का सदैव स्वागत व चित्रांकन किया। उसने अपने जीवन की कोमल भावनाओं में आखेट की गति और पशुओं की मधुर छवि मो महसूस किया। जिसकी अभिव्यक्ति उसने रंगो से सनी तूलिका तथा नुकीले पत्थरों के द्वारा गुफाओं के अन्दर तथा चट्टानों की कठोर दीवारों पर या समतल कठोर सिलाओं पर उकेर कर किया हैं। उसने इन गुफाओं के भीतर धीमें प्रकाश मे अपने जीवन की सरस तथा सरल अभिव्यक्तियां की है। उस समय मानव ने अपने भावों की अभिव्यक्ति पाषाण, लकड़ी और मिट्टी के द्वारा विभिन्न तरह की आकृतियां बनाकर करते थे। जैसे जैसे मानव सभ्यता का विकास होता गया वैसे वैसे मानव की अभिव्यक्ति का माध्यम भी विकसित होता गया। पहले जहां वह अपनी अभिव्यक्ति के लिये सीमित साधनों पर आश्रित रहता था, वही पर अब उसके सामने अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिये बहुत से माध्यम उपलब्ध है, जिनसे वह अपने भावों की अभिव्यक्ति कर रहा है। उसके इन माध्यमों मे मूर्तिकला का नाम विशेष रूप से लिया जाता रहा है।

मूर्तिकला का मतलब जिसका एक निश्चित रूप रंग व आकार हो और जिसे चारो ओर से देखा जा सके साथ ही उसमें से किसी भाव की अभिव्यक्ति हो मूर्तिकला होती है। आदिकाल से लेकर आजतक मूर्तिकला मे बहुत विकाश हुआ है। पहले जहां सीमित साधनों के द्वारा मूर्ति निर्माण का कार्य होता था वहीं पर आज मूर्ति निर्माण के बहुव सारे माध्यम उपलब्ध है। माध्यम के चयन के समय मूर्तिकार को माध्यम की क्षमता, सीमा बद्धता और उसके चरित्र के साथ अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के स्वरूप का मेल करना आवश्यक होता है। हर एक माध्यम की अपनी एक अलग सीमा होती हैं और उसका अपना चरित्र होता है। इसलिये सभी प्रकार के मूर्तिकला माध्यमों से सभी प्रकार की अभिव्यक्ति सम्भव नही है। और अगर है तो वह सार्थक नही होती है। अगर मूर्तिकार किसी विपरीत माध्यम से अभिव्यक्ति प्रस्तुत करता है तो उसे उस माध्यम का सही सहयोग नही मिल पायेगा, और न ही अभिव्यक्ति ही निखार पा सकेगी। यहां यह बात विचारणीय है कि अभिव्यक्ति मे मात्र प्रतिक्रिया का निखार नही होता है, उससे संवेदनशील मन को सुख शान्ति मिलती है। साथ ही उस मन से दूसरे मन के लिये कुछ संवाद निकलता है। यहां कलाकार को यह भी देखना है कि उसके द्वारा बनाई गई कृति से जो वह अभिव्यक्ति करना चाहता है वह उसी रूप मे दूसरों तक पहुंच रही है कि नहीं। अगर हां तो वह कलाकार की कुशल भावाभिव्यक्ति का प्रत्यक्ष प्रमाण है, कि वह अपने भावों को किसी माध्यम (मूर्ति) द्वारा अभिव्यक्त करने मे सक्षम रहा है। सर्वश्रेष्ट अभिव्यक्ति के लिये कोई माध्यम पूर्ण नही होता है।

क्योंकि उसकी कुछ अपनी सीमाएं होती है। किसी माध्यम मे कोई गुण दिखता है तो किसी माध्यम मे कोई और। उसमें किसी न किसी तरह का आभाव होता है। इसमें अस्पष्टता एक महत्वपूण कारण है, और यह किस भी भावाभिव्यक्ति के लिये एक प्रमुख वजह है। यहां पर यह बात माननी पड़ेगी कि कलाकार अपनी अभिव्यक्ति के लिये एक माध्यम को न अपना कर विभिन्न माध्यमों को अपनाएं तो उसमे अभिव्यक्ति और अधिक स्पष्ट व प्रभावशाली होगी।

मूर्तिकला मे ऐसे कई माध्यम है जो काफी समय से प्रयाग मे लाये जा रहे है। जिसमें मिट्टी, पत्थर और लकड़ी जैसे कड़े माध्यमों के द्वारा अभिव्यकित होती रही है। इन माध्यमों से बनी कलाकृति को आसानी से काफी समय तक संजोया जा सकता है। यहां पर जानने योग्य बात है कि पत्थर और लकड़ी उत्कीर्ण करके अभिव्यक्ति करने वाले माध्यम है। पत्थर का अपना एक गुण है भारीपन, सघनता और सम्पृक्तता। इन माध्यमों जिस कृति का निर्माण होगा उसमे माध्यम का गुण स्वतः उभर कर आ जाता है। यदि उसमे माध्यम का गुण उभर कर नही आता है तो अभिव्यक्ति के माध्यम मे कठिनाइयां पैदा हो सकती है, या फिर अभिव्यक्ति दुर्बल होगी। पत्थर माध्यम को अपना कर अगर हम किसी कलाकृति के द्वारा भावाभिव्यक्ति करना चाहते है तो जो जाहिर है हमे उस माध्यम मे फैलावदार आकृतियों का निर्माण नही करना चाहिये। बल्कि इसके लिये गठे हुए और ठोस आकार की कलाकृति ही स्वाभविक लगेगी। क्योंकि इसमें पत्थर का चारित्रिक गुण भी आ जायेगा। और हमारी अभिव्यक्ति सफल होगी। जैसे कि हम नटराज की मूर्ति को पत्थर के माध्यम से बनाते है तो इसका भौतिक स्तर स्वतः ही कमजोर होगा। क्योंकि इसमे पत्थर का विशेष गुण नही आ पायेगा, वो इसलिये कि पत्थर को पत्थर लगना भी तो चाहिए। पत्थर को पत्थर न लगने की वजह से ही अभिव्यक्ति कमजार व निर्बल प्रतीत होती है। मूर्ति निर्माण दूसरा प्रमुख माध्यम लकड़ी है। लकड़ी मे हम पत्थर की अपेक्षा अधिक फैलाव दिखा सकते है। इसमे लम्बाई तो काफी मिल सकती है पर मोटाई की अपनी एक सीमा होती है। प्रत्येक लकड़ का रेसा दूसरी लकड़ी से भिन्न होता है। परन्तु सभी लकड़ी के रेसे मूलतः लम्बात्मक होते है। इसलिये लकड़ी के माध्यम मे अभिव्यक्ति का स्वरूप लम्बात्मक हो तो बहुत अच्छा नही पर लकड़ी को क्षितिजीय रूप मे अभिव्यक्ति के स्वरूप के अनुसार व्यवस्थित करके सर्जना का कार्य किया जा सकता है। जबकि लकड़ी की छोटे आकार की मूर्ति निर्माण मे ऐसी कोई कठिनाई नही आती है। लकड़ी और पत्थर पर उत्कीर्ण कर बनाई जाने वाली कृतियों के साथ एक समस्या यह भी है कि उत्कीर्णन का कार्य करते हुए अगर लकड़ी या पत्थर का कोई अंश टूट जाता है तो उसे यथा स्थिति मे लाना थोड़ा मुश्किल हो जाता था। परन्तु आज के समय में बहुत से ऐसे रसायन आ गये है जिससे टूटी लकड़ियां और पत्थर आसानी से जुड़ जाते है, और कलाकार प्रसन्नता पूर्वक अपने उत्कीर्णन का कार्य पूरा करने मे लगा रहता है। उत्कीर्ण करके अभिव्यक्ति मे सहायक ये माध्यम आसानी से उपलब्ध होने के साथ साथ कम खर्चीले भी होते है। इन माध्यमों मे कलाकार अपनी स्मृति के अनुसार भी कार्य कर सकता है, और अपनी भावनाओं को एक साकार रूप दे सकते है। इन माध्यमों का अपना एक अलग महत्व है। ये माध्यम युगों से अत्यन्त लोकप्रिय रहे है। संसार की सर्वश्रेष्ट और प्रभावकारी अभिव्यक्तियां इस माध्यम में हुई है, आगे भी होती रहेंगी। इन दोनों ही माध्यमों का सम्बन्ध वास्तुकला से भी रहा है। दीवारों पर लकड़ी और पत्थरों के द्वारा भित्ति चित्र बनाना इसी के अर्न्तगत आता है। इन माध्यमों की उपलब्धता भी सहज है, साथ ही अभिव्यक्तिकरण के लिये किये गये कार्यों मे तकनीकी उपकरणों एवं विस्तृत व्यवस्था की भी अधिक आवश्यकता नही पड़ती है।

प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों मे शिल्परत्नम् एक ऐसा ग्रन्थ है जिसमे मिट्टी में मूर्ति निर्माण की विधियों पर विशेष जानकारी दी गई है। यूं तो अन्य बहुत से ग्रन्थों मे इस विषय पर छुट पुट चर्चाए है, परन्तु इस ग्रन्थ में प्राचीन भारत के मूर्ति शिल्प के विधान पर भी प्रचुर मात्रा मे प्रकाश डाला गया है। इस ग्रन्थ का रचना काल सोलहवीं शताब्दी माना जाता है। इसके रचयिता श्री कुमार जी है जो केरल के एक ब्राम्हण कुल मे पैदा हुए थे। अम्बालप्पूजा (मध्य केरल) के राजा श्री देवनाराण के कहने पर इस ग्रन्थ की रचना की। इस ग्रन्थ के 44वें श्लोक मे बताया गया है कि किस तरह की मिट्टी से मूर्ति निर्माण व किस तरह मूर्ति निर्माण के योग्य मिट्टी प्राप्त की जा सकती है और इसके कितन प्रकार है और इनका नाम क्या है। अध्याय एक के श्लोक 44 व अध्याय 2 के श्लोक 35 मे बताया गया है कि मूर्ति निर्माण के लिये धार्मिक स्थानों, पर्वत अथवा फुलवारी से ही मिट्टी लेना उचित बताया गया है। इस ग्रन्थ मे चार प्रकार की मिट्टी व उसके बनाने की विधि बताई गई है।

जो निम्न है :–

01:– कठिना मिट्टी
02:– मन्द कठिना मिट्टी
03:– मृदु मिट्टी
04:– मृदुतर मिट्टी

1, कठिना मिट्टी:– इस मिट्टी को बनाने के लिये ईंट को महीन पीस कर छान लिया जाता है। इसमे बाल्मीकि मिट्टी का भी प्रयोग किया जा सकता है। इसमे सुपारी के छिलके का पानी मिलाने के बाद खरल करना होता है। इस प्रकार की मिट्टी की व्याख्या श्लोक संख्या 35 और 36 में की गई है।

2, मन्द कठिना मिट्टी:– इस प्रकार की मिट्टी के बारे मे श्लोक संख्या 37 में बताया गया है। इसमे गाय का गोबर मिलाया जाता है।

3, मृदु मिट्टी:– इस प्रकार की मिट्टी का वर्णन श्लोक संख्या 37 व 38 मे किया गया है। इसमें पकी मिट्टी के बर्तन का चूरा चार भाग और साधारण मिट्टी एक भाग मिलाकर खरल किया जाता है।

4, मृदुतर मिट्टी:– शिल्परत्नम् के श्लोक 38 मे बताया गया है कि मृदु मिट्टी मे गाय का गोबर मिलाने से अधिक मुलायम और चिकनी व लोचदार हो जाएगी।इस प्रकार मिट्टी की चार श्रेणियां व इनको बनाने की विधि का वर्णन भी किया गया है।

पत्थर माध्यम मे बात की जाय तो ये भी तीन प्रकार के बताये गये है जिसमे 1, बलुआ पत्थर 2, संगमरमर और 3, है ग्रेनाइट। इसमे ग्रेनाइअट सबसे कठोर होता है उससे कम संगमरमर होता है। संगमरमर मे मूर्ति उत्कीर्णन का कार्य करने समय तेज से चोट नही

करनी चाहिये इसलिये कि इसमे चोट अन्दर तक जाती है जिससे चोट के निशान को मिटाने के लिये काफी अन्दर तक कार्य करना पड़ सकता है। इन सभी मे सबसे मुलायम पत्थर बलुआ पत्थर होता है जिसे हम सैन्ड स्टोन भी कहते है। पत्थर पर कार्य करने से पहले अगर इन्हे पानी से भिगो दिया जाय तो ये अपेक्षकृत मुलायम हो जाते है और उत्कीर्णन का कार्य आसानी से होता है। और मनचाही आकृति का निर्माण कर अपने भावों की अभिव्यक्ति कर सकता है।

माध्यम के रूप मे इन सामाग्री को पाने के बाद भी शिल्पी जगत को सन्तोष नही हुआ। उसने अपनी अभिव्यक्ति के लिये नित नये नये प्रयोग कर रहा है और अपनी अभिव्यक्ति को और अधिक प्रभावशाली बना रहा है। कला के क्षेत्र मे आज तकनीकी विकाश का काफी प्रभाव पड़ा है। आज का हर कलाकार अपनी अभिव्यक्ति मे एक नई ताजगी का एहसास कराना चाहता है। अभिव्यक्ति की इस ताजगी के लिये वह मूर्ति और चित्र दोनो को एक साथ अपनी कलाकृति मे प्रयोग कर रहा है। इस प्रकार वह देखता है कि साथ जोड़ कर बनाई गई कलाकृति मे अभिव्यक्ति अधिक प्रभावशाली प्रतीत होती है। और आम आदमी के लिये ग्रहणशील भी हो रही है। नये की इच्छा और अतीत के गौरव के बीच के तनाव ने भारत की विविध कला शैलियों को भी कलाकारों ने अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया है। जो उस जगह के नाम से जानी जाती है जहां उस अभिव्यक्ति के माध्यम को अपनाने वाले कलाकार रहते थे। पिछले पचास वर्षो के दौरान कला और संस्कृति के संकुचित विचारों के बावजूद भारत में भावाभिव्यक्ति की दो शैलियों को जन्म हुआ है इनमे पहली को हम परम्परावादी और दूसरी को आधुनिकतावादी कला शैलियों के नाम से जानते है। इन दोनो शैलियों के अन्दर क्या हो रहा है हम सभी से यह छुपा नही है। एक शैली पुराने विचारो को महत्व देती है तो दूसरी स्वछन्द रूप से कलाकृतियों का निर्माण कर अपने भावों की अभिव्यक्ति कर रही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1, कर्मशाला शिल्प विज्ञान, लेखक – विनोद कुमार विन्दल, सरोज प्रकाशन, इलाहाबाद।
2, घरत बाफ बस्तर इमेज एण्ड मेकरस, लेखक – मीरा मुखर्जी।
3, ब्रान्ज कास्टिंग, लेखक – पाण्डेय सुरेन्द्र।
4, लास्ट वैक्स प्रौसेस आफ कास्टिंग इन मयूरभंज, मैन इन इण्डिया, लेखक गौतमशंकर राय।
5, शिल्परत्नम्, सोलहवीं श्ताब्दी का संस्कृत ग्रन्थ, लेखक – श्री कुमार,।
6, मानसार, संस्कृत ग्रन्थ, लेखक – प्रसन्न कुमार।
7, भारतीय मूर्तिकला : शिल्प विज्ञान, लेखक – पी0 चन्द्रविनोद, प्रकाशन – रतन प्रकाशन मन्दिर, आगरा।